समुद्रवसने देवि (भूमि वन्दना)

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

समुद्रवसने देवि (भूमि वन्दना)

प्रकार	दैनिक प्रार्थना
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Traditional morning verse
आभार	पारम्परिक; सार्वजनिक।

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।

samudravasane devi parvatastanamaṇḍite |

विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

viṣṇupatni namastubhyaṃ pādasparśaṃ kṣamasva me ||

अर्थ

हे समुद्र रूपी वस्त्र धारण करने वाली, पर्वतों से सुशोभित, विष्णुपत्नी देवी — आपको नमस्कार; मेरे पैरों के स्पर्श को क्षमा करें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।